प्रातः क्लास 24-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबायाद है?

ओमशान्ति। ज्ञान की भी यात्रा है, याद की भी यात्रा है। वह है मूलवतन की यात्रा। वह है बैकुण्ठ वतन की यात्रा। तो गाया तुम दोनो यात्राओं पर हो। अभी यह तो बच्चे जानते हैं हमको पढ़ाने वाला है ईश्वर। अभी मिलती है ईश्वरीयमत। ~~ई~~ पीछे मिलेंगी दैवी मत। पीछे फिर आसुरीमत। यह भी किसको सरधा कहो आसुरी मत है तो बिगड़ जाते हैं। पाण्डवों को तो गुप्त ही चलना है। नहीं तो बिगड़ पड़ेंगे। समझते बड़ा मुश्किल हैं। इस लिए बाबा कहते हैं कोशिश कर के पहले2 बात बतानी चाहिए बाप की समझानी। तो फिर सर्वव्यापीकी बात भी निकल जावेगी। बाप की समझानी से तो मनुष्यों की बुधि खुल जानी चाहिए। जब कि तुम सिध कर ~~ब~~ बतलाते हो। कृष्ण भगवान नहीं हैं। तुम ही सिर्फ कहते हो शिवभगवानुवाचः। परन्तु मनुष्यों की बुधि इतनी ठिक्कर भित्तर की है जो ऐसी सहज बात भी किसकी बुधि में नहीं बैठती है। हमारा प्यार किससे है। मिट्टी से तो प्यार नहीं होता। अभी उनको तो कुछ भी कह नहीं सकते हैं। जैसे मिट्टी वा पत्थर है। वैसे ब्रह्म महत्तत्व भी क्या है। कुछ भी नहीं। वह तो रहने का स्थान है ना। आकाशको क्या कहेंगे। यह भी रहने का स्थान है। उनको फिर भगवान कैसे कह सकते हैं। जैसेयह (आकाश) रहने का स्थान है वैसे वह (ब्रह्ममहतत्व) रहने की जगह है। वहां आत्मायें रहती हैं। यह है जीवात्माओं के ~~रहे~~ रहने का स्थान। सिर्फ आत्मा नहीं कह सकेंगे। दुनिया तो इन बातों को जरा भी नहीं जानती। तुम बच्चों की बुधि में है हम आत्माओं के रहने का स्थान है ब्रह्ममहतत्व। यह बातें कोई भी बिदवान आचार्य पंडित आद नहीं जानते। तुम्हारे पास इतने ढेर आते हैं वह क्या समझते होंगे। कोई तो थोड़ा ही समझ कर चले जाते हैं। भल तुम्हारे पास सेन्टर भी बहुत आते हैं परन्तु याद की यात्रा में बहुत ही परफक्त अवस्था चाहिए। अभी तो सन्यासियों आद से कितना माथा मारते हो। यहलोग अन्त में कहेंगे हम तो सभी फेल हैं। जैसे महर्षि ने भी कहा है ना हम फेल हैं। भक्ति मार्ग में सभी फेलयर्स हैं। यह भी तुमको समझाना पड़ता है। ~~सन्यासियों~~ आद में तो यह बातें है नहीं। ~~ब्रउन~~ में है मनुष्य मत। तुम जानते हो हम अभी चलते हैं ईश्वरीय मत पर। दैवी मत पर भी नहीं। मनुष्य तो सभी हैं तमोप्रधान। तो उन्हों की मत हम कैसे लेंगे। ~~इस~~ इस समय हैं हम पुरुषोत्तम संगम युग पर। जब कि बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। वही हमको श्रीमत दे रहे हैं। मनुष्यों की मत है ही भक्ति मार्ग की। ज्ञान की हो न सके। ज्ञान तो सिवाय ब्राहमणों के और कोई को होता ही नहीं। हम किसके× मत पर चल रहे हैं, हमको ~~कौन~~ किसकी मत मिल रही है, जरूर कोई तो होगा ना। ऐसी ईश्वरीय मत को छोड़ हम मनुष्यमत पर फिर कैसे चलेंगे। चलेंगे। भल बड़े2 शंकराचार्य आद हैं हम तो कहेंगे यहभक्ति दुर्गति को पाया हुआ है। उनका बुधियोग बाप से है नहीं। बाप खुद कहते हैं विनाशकाले विप्रीत बुधि। मुझे बिल्कुल जानते ही नहीं। गाली देते रहते हैं। तो ऐसे विप्रीत बुधि विनश्यन्ति। भगवानुवाच है ना। परन्तु भगवान को ही नहीं समझते हैं। रातदिन का फर्क पड़ जाता है। इस समय एक बात में ही तुम्हारी विजय होनी है। तुम समझते हो इस स्थापना का कार्य तो होना ही है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। सो कब और किसके? ब्रह्मा द्वारा जरूर ब्राहमण ही होंगे। ब्रह्मा तो रचयिता नहीं हैं। रचयिता है ही निराकार शिव बाबा। वह तो है ही एक। ~~बाकी~~ बाकी तो भक्ति मार्ग के अथाह चित्र हैं। मनुष्यों की भी तो देवताओं की भी है। वह तो है निराकार। निराकार का भी अर्थ नहीं समझते हैं। वह समझते हैं निराकार माना कुछ है नहीं। तुम समझाते हो उनका आकार साकार नहीं है। आकार सुक्ष्मवतन वालों को साकार स्थूलवतन वालों को कहा जाता है। तो वह समझते हैं आकार साकार नहीं है तो कुछ भी नहीं हैं। नाम-रूप देशकाल है नहीं। रावण ने बिल्कुल ही तमोप्रधान बनाये दिया हैं। सभी का गला ही घुट जाता है। अभी तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अच्छी रीत समझ सकते हैं। तुम बच्चों ~~को भी~~ को भी बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। युध भी गाई हुई है। हंस और बगुलों की कितनी युध चलती है। उन्हों ने कौरवों और पाण्डवों स्थूल लड़ाई दिखाई है। गीता में बाप ने क्या समझाया है अभी तुम समझते हो। लड़ाई का तो नाम निशान

नहीं। बाप तो राजयोग सिखलाते हैं। टीचर पढ़ावेंगे या लड़ाई सिखावेंगे। यह पाण्डव गवर्मेन्ट बड़ी जबरदस्त गवर्मेन्ट है। पाण्डव गवर्मेन्ट की विजय। कौड़वों गवर्मेन्ट का विनाश तो हुआ ही है। परन्तु रावण के सम्प्रदाय का संग भी बड़ा कड़ा है। यह है राम सम्प्रदाय। वह बगुल। तुम हंस। घर में भी मित्र-सम्बन्धियों आद का कित कितना हंगामा होता है। एक तरफ आसुरी सम्प्रदाय ढेर और दूसरते तरफ तुम ब्राहमण सम्प्रदाय कितने थोड़े हो। गायन भी है राम गयो·· आत्मायें सभी चली जावेंगी। रावण सम्प्रदाय और राम सम्प्रदाय। रावण सम्प्रदाय के तो बहुत ही ढेर हैं। राम सम्प्रदाय के तो कितने छोटे हैं। फिर भी प्रजा बनती रहती है। थोड़ा बहुत सुना बेहद के बाप से वरसा मिलता है यह भी प्रजा बन गई। यही तुमको एडवरटाईजमेन्ट करनी है। बाकी लड़ाई आद की बात ही नहीं। शास्त्रों में क्या2 बातें लिखदी हैं। जैसे नावेल्स बनाते हैं। उनमें बहुत छी2 अक्षर होते हैं। शास्त्रों में छीछी अक्षर नहीं होते हैं। नावेल्स में लव की बातें होती हैं। नावेल्स पढ़ने की आदत किस में पड़ जाती है तो वह छोड़ते नहीं हैं। कई बच्ची बच्चियां भी नावेल्स पढ़ लेती हैं। पिय के घर से छिपा कर ले आती है। बाबा को तो मालूम पड़ जाता है। छिपाये2 कर पढ़ते हैं। तुमको ससुर घर तो जाना है ना। दो बाप मिले हैं। श्रृंगारने लिए। यह बेहद का पिय का घर है। पिय के घर रावण राज्य में क्या रखा है कुछ भी नहीं। हम अभी ससुर घर जाते हैं। जेवर आद कुछ नहीं बनवा में बैठे हैं। तुम्हारी बुधि में है हम सुखधाम में जाने वाले हैं। बाया शान्तधाम। तो शान्तिधाम को भी याद करना है। अभी घर जाना है। बाप कहते हैं मुझ अपने बाप को याद करो। बाप वहां भी तो यहां भी है। घर तो वहां है ना। तुम्हारा भी वहा घर है। अभी तो घर जाना है ना। फिर नीचे उतरेंगे। अभी तो कितना दूर जाना है। सभी आत्माओं का झुण्ड जावेंगा। जैसे मक्खियों का झुण्ड जाता है। सब से तीखा झुण्ड मधुमक्खियों का होता है। बहुत आपस में एकता होता है। इन्हों का हेड रानी होता है। भारत में भी पहले2 रानी पीछे राजा। इसलिए मदरकन्ट्री कहते हैं। तुम ही रानियां बनती हो। राजभाग लेते हो। माताओं ने ही पुकारा है बाबा हमको पति लोग तंग करते हैं, नंगन करते हैं। टच करते हैं। यह भी माया है ना। ऐसे शरीर तो टच बहुत करते हैं, बच्चियां कहती हैं हमको यह अच्छा नहीं लगता। यह भी देहअभिमान की बात है। देह को देखकर टच करते हैं। आत्मा को देखे तो आत्मा को टच कर सकते हैं क्या। आजकल बाप कहते हैं यह भी सहन करो। टच करने में कोई पाप नहीं है। पाप की बात है नंगन होना। यह तो कुछ नहीं है। मुझ द्रौपदी ने भी पुकारा है हमको नंगन करते हैं। वह बिल्कुल न होना चाहिए। बाप समझाते हैं साथ में धर्मराज भी इकट्ठा है राईट हैंड। बच्चों की चलन नोट करते जाते हैं। ड्रामा में पार्ट में सजा देने वाला भी वहीं है। यह सभी नूंध है ड्रामा में। ऐसे नहीं कि कोई किताब है जिसमें बैठ लिखते हैं नहीं। ड्रामा में नूंध है। बाप समझ सकते हैं और समझाते हैं। ब्रहमा द्वारा बाप बैठ समझाते हैं वह भी ड्रामा अनुसार। अन्त में यह टचिंग आद कुछ नहीं रहेंगी। कुछ भी याद न रहेगा। ऐसी देहोअभिमानी अवस्था बन जावेंगी। जैसे सतयुग में पवित्र सम्बन्ध में रहते हो वैये यहां तुम पवित्र बन जावेंगे। जैस पवित्र आत्मा आई वैसे ही पवित्र बन जावेंगे। अभी पवित्र बनते हैं जो फिर पवित्रता में सतयुग में आवेंगी। फिर जैसी2 अवस्था में है। अवस्था पर ही पद मिलता है। यह भी तुम जानते हो हरेक एक्टर्स की चलन अपनी है एक न मिले दूसरे से। यह एक बेहद का ड्रामा नाटक है। उस ड्रामा को समझने की विशाल बुधि चाहिए। कितनी छोटी सी आत्मा उनको दूम्ब कितना बड़ा मिलता है पार्ट बजाने के लिए। उनका पार्ट भी अविनाशी है। हरेक आत्मा का फिचर्स अपना शरीर अपना2 हैं। फिर दूसरा जन्म लेंगे। उसमें भी हरेक आत्मा का फिचर्स अलग। यह बनाया हुआ बेहद का ड्रामा है। यह बहुत सूक्ष्म बातें हैं। कोई अच्छी तरह ख्याल करेंगे तो मजा आवेगा। कम पढ़ाई थोड़े ही हैं। बहुत बड़ी पढ़ाई है। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। बच्चा पैदा हुआ और मालिक बना। फिर उनकी चलन पर है। अगर चलन अच्छी नहीं होगी तो बाप कहेंगे यह तो लायक